# एम॰ए॰ हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)

## पाठ्यक्रम–कथेत्तर गद्य साहित्य

डॉ. कविश्री जायसवाल
असि. प्रोफेसर (हिंदी)
एन. ए. एस. कॉलेज, मेरठ
ईमेल kavishrijaiswal01@gmail.com

## यात्रा वृत्तांत की विशेषताएँ

साहित्य को किसी बँधे-बँधाए साँचे में तो नहीं बाँधा जा सकता फिर भी उसकी प्रत्येक विधा की अपनी कुछ खास विशेषताएँ होती हैं जो उन्हें एक दूसरे से अलग करती हैं और उन्हें एक विशेष पहचान देती हैं। यात्रा-वृत्तांत में स्थान और तथ्यों के साथ-साथा आत्मीयता, वैयक्तिकता, कल्पनाशीलता और रोचकता का विशेष महत्व होता है।

**स्थानीयता**

यात्रा-वृत्तांत में लेखक का उद्देश्य स्थान-विशेष के सम्पूर्ण वैभव, प्रकृति, रस्मों-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार, मनोरंजन के तरीके तथा जीवन के प्रति दृष्टिकोण का चित्रण करना होता है। यह लेखक पर निर्भर करता है कि वह इनमें से किस तत्व को ज्यादा प्रमुखता देता है। किसी प्रदेश-विशेष की यात्रा में उसे जो चीज़ सबसे ज्यादा प्रभावित करती है, आमतौर से उस तत्व को वह प्रधानता देता है। इसलिए उसके चित्रण में कहीं विवरण तो कहीं भावों की प्रधानता होती है। कभी-कभी वह तुलनात्मक पद्धति का सहारा भी लेता है। प्रकृति-सौंदर्य के चित्रण में उसकी शैली भावात्मक हो उठती है। यदि वह स्थान-विशेष को जल्दी में देखता है तो उसकी शैली वर्णनात्मक हो जाती है। अपने देश या प्रांत की अन्य प्रांत या विदेश से तुलना करते समय लेखक तुलनात्मक शैली का सहारा लेता है।

**तथ्यात्मकता**

यात्रा वृत्तांत में लेखक की कोशिश होती है कि यात्रा के दौरान उसने जो कुछ देखा है उससे संबंधित तथ्यों का विवेचन कर दे। लेकिन ऐसा करते समय वह भूगोल और इतिहास-लेखन की शैली का

सहारा न लेकर कथा-साहित्य की सहज, सरल भाषा शैली को अपनाता है जिससे वृत्तांत में रोचकता बनी रहे।

## आत्मीयता

यात्रा-वृत्तांत में आत्मीयता का भाव होना ज़रूरी है। यात्रा के दौरान लेखक जिन स्थानों, स्मारकों, दृश्यों आदि को इतिहास और भूगाल के रूप में नहीं देखता, बल्कि वह उनसे आत्मीय संबंध स्थापित करता है ताकि पाठक को पढ़ते समय अपनापन और सच्चाई की अनुभूति हो सके। इसमें लेखक यथातथ्य वर्णन से बचने की लगातार कोशिश करता है ताकि वृत्तांत, उबाऊ, नीरस और इतिहास न बनने पाए। दृश्यों अथवा स्थितियों के साथ आत्मीय रिश्ता ही पाठक को वृत्तांत से जोड़ने में सहायक सिद्ध हो सकता है। आत्मीयता ही उसे गाइड बनने से रोकती है।

## वैयक्तिकता

यात्रा-वृत्तांत में वैयक्तिकता की ज़रूरत अन्य विधाओं की तुलना में कहीं ज्यादा महसूस की जाती है। खान-पान, वेश-भूषा, पारिवारिक सुख-सुविधा का अहसास यात्रा के दौरान कुछ ज्यादा ही होता है क्योंकि व्यक्ति उस समय अपने आत्मीय जनों से दूर होता है। यात्रा के दौरान आदमी अपरिचित लोगों के, बीच रहता है जहाँ उसकी शक्ति और प्रतिभा से लोग वाकिफ नहीं होते, ऐसे में लेखक को अपने व्यक्तित्व से दूसरों को परिचित एवं प्रभावित करना होता है। इसलिए यात्रा वृत्तांत में लेखक के व्यक्तित्व की प्रभावशाली छाप मौजूद रहती है।

## रोचकता

यात्रा-वृत्तांत का सबसे अनिवार्य गुण रोचकता है। यह पाठक को पढ़ने के लिए प्रेरित करता है यात्रा-वृत्तांत में रोचकता लाने के लिए लेखक किसी स्थान से जुड़ी लोक-कथा, दंत-कथा आदि का उल्लेख करता है। कभी-कभी वह अचानक होने वाली घटनाओं का वर्णन करता है तो कभी रोचक शीर्षक के समावेश से वृत्तांत की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट करता है। यानी रोचकता को लेखक एक तकनीक के तौर पर इस्तेमाल करता है। इसमें मिथकों, प्रतीकों, अलंकारों और मुहावरों का भी प्रयोग किया जाता है। चित्रात्मक वर्णन भी इस विधा की एक खास विशेषता है। संवेदनशीलता न केवल स्वाभाविक बनाती है बल्कि इसे एक साहित्यिक कृति का रूप भी देती है।

इस प्रकार, यात्रा-वृत्तांतों में देश-विदेश के प्राकृतिक-दृश्यों की रमणीयता, नर-नारियों के विविध जीवन-संदर्भ, प्राचीन एवं नवीन सौंदर्य-चेतना की प्रतीक कलाकृतियों की भव्यता तथा मानवीय सभ्यता के विकास के द्योतक अनेक वस्तु-चित्र यायावर लेखक के मानस में रूपायित होकर वैयक्तिक रागात्मक ऊष्मा से दीप्त हो जाते हैं। लेखक अपनी बिंबविधायिनी कल्पना-शक्ति से उन्हें पुनः मूर्त करके पाठकों की जिज्ञासा-वृत्ति को तुष्ट कर देता है।' (हिंदी गद्य का इतिहास, रामचंद्र तिवारी, पृ0 296)

कहने का तात्पर्य यह है कि यात्रा के समय यायावर का साहस, उसकी संघर्षशीलता, स्वछंदता और अचानक आने वाली प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने की क्षमता उसे एक वीर नायक की-सी गरिमा प्रदान करती है और पाठक उसे प्यार करने लगता है।